श्रीराधासरसविहारिणे नमः ।

अष्टयाम

जिसमें

श्रीराधासरसविहारीलाल रसिकजनप्रतिपाल की अष्टप्रहरकी सेवाका प्रकार दोहावली व पदावली अनेक राग रागिनियोंमें परम मनोहर वर्णन किया गया है

जिसको

जयपुरनिवासी प्रेममूर्ति पंडित शिवदयाल हरिसम्बन्धी नाम सरसमाधुरीशरण गौड़ द्विजने प्रेमानुरागियों के आनन्दवर्द्धन निमित्त

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा कर प्रसिद्ध किया ।

प्रथमबार १०००] सन् १९१३ ई० [मूल्य ४ आना

पुस्तक मिलने का पता— मुं० भगवानदास भार्गव, मुख्त्यारि अलवर

श्रीदोहावली का सूचीपत्र ॥

श्रीदोहावली

अष्ट याम सेवा भावना विलास।

श्रीमती निकुंजेश्वरी व कुंजनृपति राधासरस विहारिणे नमः। श्रीशुकसहचरी यूथेश्वरी व श्री-श्यामचरणदासीरसाचार्य्यचरणकमलेभ्यो नमः। श्रीगुरु अलिबंलदेवीजूपादपद्मेभ्यो नमः। श्रीललि-तादि अष्टअलिपादांबुजनमोनमः॥

अथ श्रीराधासरसविहारीलालशरणागत प्रति-पालजूकी अष्टयाम सेवाभावनाविलास लिख्यते॥

दो० प्रातहि उठि पहिलैंकरे शुक अलि चरण प्रणाम।
चरणदासि पदबंदि पुनि बलदेवी गुनधाम॥ १॥
सहचरिरूप सु आपनो श्रीगुरु दियो बताय।
ताको अनुसंधान करि श्रीबृंदावन ध्याय॥ २॥
रंग महल बृंदाबिपिन तामें करे प्रवेश।
सरस माधुरी छवि छटा मगन रूप आवेश॥ ३॥
श्रम जल जो युग अंगको सो जमुनारसरूप।

कंकनकृत श्रीविपिन के चहुँदिशि बहत अनूप ॥ ४ ॥
ऐसे वृंदाविपिन में रंग महल रसखान।
कल्पवृक्ष बहुरंग के छाये लता वितान ॥ ५ ॥
रत्नजटित अवनी खचित मंदिर लता अनेक।
मणिमय नाना रंग के अधिक एक तें एक॥ ६ ॥
नाना रंग मणीन के विरचित तरु अरु फूल।
तिनमें मानिक लाल के बहुविधि फल रहे झूल ॥ ७ ॥
तिन ऊपर तैसे सुभग रत्नरचित खग पांति।
सुवा सारिका आदि ले मधुप गुंज बहु भांति ॥ ८ ॥
श्रीसुखसहचरिचरन अलि श्रीललितादि सहेलि।
सेवत दंपति सकल मिल प्रीति सहित मन मेलि ॥ ९ ॥
रस मय सूरज चंद्रमा तिनको तहां प्रकास।
प्रिया मुखांबुज छटातें प्रगटे आनँद रास ॥१०॥
सैन कुंज में सेज जो रेशम बुनी विचार।
पाये पटिया जगमगे हीरा रचित सुढार ॥११॥
कोमल दुग्ध सुफेन सम गद्दा तकिया सौंज।
बिछे छबीली भांतिसों लज्जित देख मनोज ॥१२॥
लघुमंडप इक सेजपर तन्यों अनूठी भांति।
डांडी रत्न जराव की झालर मुक्ता पांति ॥१३॥
जालिन द्वारा तरुन के फूलन की मकरंद।
पवन परसि आवत रहे दंपति देत अनंद ॥१४॥
जल गुलाब के जंत्र बहु छुटत विविध सुखकंद।
मानों श्रीवन अवनि के आनँद अश्रु सुछंद ॥१५॥
सोये सैया रस भरे श्रीमत श्यामा श्याम।

घन दामिनि ज्यों जगमगे अंग अंग अभिराम ॥१६॥
चंपक बेलि तमाल पै उरझि रहत जिहिं ढंग।
योंही दंपति हिलमिले सोय रहे इक संग ॥१७॥
जान सुअवसर सुख सखी बीना वाद्य बजाय।
भीनें सुरन सुराग भर दीन्हें जुगल जगाय ॥१८॥
लट कुंडल सों उरझि रहि अरु हारनतें हार।
भूषण अंगन में सिथिल श्रीदंपति सुकुमार ॥१६॥
चिबुक परस्पर परसि दोउ नैना रहे मिलाय।
गलबैंयां दीनें युगल रहे अंग लपटाय ॥२०॥
दंपति लंपट लालची पीवत रस अधरान।
छके प्रेम प्रीतम प्रिया पोषत अपने प्रान ॥२१॥
प्रीतम के अधरान पर अंजन लीक लसंत।
प्यारी कलित कपोल पै पीक लीक दरसंत ॥२२॥
हरित मणिन के पात्र में मधुर भोग अलि लाय।
चरनदासि निजकरकमल दंपति दियो पवाय ॥२३॥
जमुनोदक अचवाय के बीरी दई बनाय।
सरस माधुरी रूप लखि दोउ कर लई बलाय ॥२४॥
निज निज दीठिन डर सखी करी आरती चार।
जगमग जोति प्रकाश में युगवर रही निहार ॥२५॥
दर्पन में मुख आपनो दंपति रहे निहार।
छवि लखि रीझे परस्पर देत आपनपौ वार ॥२६॥

॥ इति श्रीमंगलाभावनाविलास संपूर्णम् ॥

अथ वनशोभा निहारन भावना वर्ण्यते ॥

दो० उठे सेज तें जुगल वर दे गलबैंयां लाल।

श्रीवन शोभा देखने चले हंस गति चाल ॥ १ ॥
चलत स्वल्प गति सहज में छैल छबीले संग ।
प्रगटत नांना नृत्यगति छलकत छबि अँग अंग ॥ २ ॥
लता कुंज बृंदा बिपिन बिहरैं बिबि सुकुमार ।
श्रीमुख की मकरंद लहि मधुप रहे गुंजार ॥ ३ ॥
ले रुमाल नव नागरी निकट जुगल सरकार ।
भ्रमर निवारत चलत हैं बोलत मुख बलिहार ॥ ४ ॥
ले अलि बीन प्रबीन अति सारंगी मिरदंग ।
गावत पद सुरतांत सुख हिये भरे रस रंग ॥ ५ ॥
गहि गहि ललित लतान कों जुगल लाल रसकंद ।
पत्रनमें प्रतिबिंब लखि मानत अधिक अनंद ॥ ६ ॥
सूंघत सुमन गुलाब के जुगल रसिक रिझवार ।
मुदित होत मन में महा आहा मुख उच्चार ॥ ७ ॥
शोभा श्री युगअंग की सहचरि रही निहार ।
सरस माधुरी छबि छकी संग युगल सरकार ॥ ८ ॥

इति श्रीवनशोभानिहारनभावनाविलाससंपूर्णम् ॥

अथ स्नानकुंजकी भावना लिख्यते ॥

दो० पुनि दंपति असनान हित गवनें नवल निकुंज ।
जमुनाजू की नहर तहँ आई जल की मंजु ॥ १ ॥
हौद सुगंधित जल भरे छूटत बहु जल जंत्र ।
मणि चौकी राजे जुगल सखियन के परतंत्र ॥ २ ॥
निसि के श्रम गति करनहित अतर रमावत अंग ।
कुमकुम उबट न्हवाय के अतिशय भरी उमंग ॥ ३ ॥
भीजी सारी धोवती झलकत शोभा गात ।

छलकतछबि प्रति अंगकी निरखिसखी बलिजात॥ ४ ॥
लै रुमाल कोमल अली पोंछत अँग अभिराम।
अतरोटा अरु धोवती पहरे श्यामा श्याम ॥ ५ ॥
छबिनिधि गुननिधि रूपनिधि शोभानिधि युगचंद।
सरस माधुरी अंग तें स्रवत सुधा आनंद ॥ ६ ॥

इति श्रीस्नानकुंजकीभावनाविलास सम्पूर्णम् ॥

अथ शृङ्गारकुंजकी भावना लिख्यते ॥

दो० कुंज सरस शृङ्गार में दंपति को पधराय।
दाड़िम दाख सुआदि ले दीन्हें युगल प्रवाय ॥ १ ॥
जमुना जल अचवायके बीरी दी हरषाय।
करन लगी शृङ्गार सखि मन में मोद बढ़ाय ॥ २ ॥
प्यारी की बेनी गुही सुन्दर सरस सँवार।
जूरो बांध्यो लाल को नीकी भांति सुधार ॥ ३ ॥
प्रिय पहिराई कंचुकी सारी सरस उढ़ाइ।
अतरोटा अद्भुत सज्यो ता छबि कही न जाइ ॥ ४ ॥
प्रीतम नीमा पीत रँग पगिया सीस धराइ।
मुकट चंद्रिका जुगल के मस्तक दई सजाइ ॥ ५ ॥
नील मणी भूषण प्रिया पीतमणी प्रिय अंग।
पहराये अँग अंग में अलियन हिये उमंग ॥ ६ ॥
मृग मद बेंदी आड़ शुचि रची प्रिया के भाल।
केशर को पिय के तिलक मस्तक कियो रसाल॥ ७ ॥
नथ बुलाक नासा सजी कुंडल करण सुफूल।
श्याम पीत चिबु बिंदनी रची सरस अनुकूल ॥ ८ ॥
अलकन अतर रमाय पुनि अंजन नैन लगाय।

दियो दिठौना भाल बिव सुंदर असित बनाय ॥ ६ ॥
मुक्त हीर हारावली पुष्पन की रचि माल।
पहराई बिव चन्द कों सरस माधुरी बाल ॥१०॥
कटिकिंकिनि पग घूँघरू अनवट बिछिया साज।
पायजेब पायन रची छुम छुम छुम छुम बाज ॥११॥
चरनदासि सखि चरन में दियो महावर रंग।
मनु हिय को अनुराग शुचि पद अंबुजके संग ॥१२॥
लै आई श्रीसुखसखी सामा भोंग शृँगार।
नाना बिधि पकवान धर सरस स्वादु भर थार ॥१३॥
प्रीतम परमासक्त ह्वै प्रिय को बिबिध निहोर।
सुकर पवावत प्रेम सों अरस परस दै कोर ॥१४॥
जल सुगंध सीतल मधुर श्रीगुरुअलि अचवाय।
सरस माधुरी रचि सरस बीरी दई बनाय ॥१५॥
सिंहासन पधराइ बिव करी आरती बार।
डीठ डरन सहचरि सुघर जै जै कहि बलिहार ॥१६॥
प्रथमहिं सखियन जुगलको नृत्य दिखायो आप।
साज बाज लै ताल मिल गायो सरस अलाप ॥१७॥
श्रीराधे तब रीझिके बीन लई कर धार।
प्रीतम ने मुरली लई बजवत बारंबार ॥१८॥
जम्यो रंग रसबस भये सरस्यो प्रेम अपार।
लपट मिले लंपट दोऊ गल में बैंयां डार ॥१६॥
पुनि चौपर के खेल में हिलन मिलन को दांव।
होड़ा होड़ी झगर हँसि जान हिये को भाव ॥२०॥
लाड़ लड़ावैं जुगल को सखियां बिबिध प्रकार।

निरखि निरखि छबि माधुरी तन मन डारैं वार ॥२१॥
कछु सामग्री यथारुचि दंपति देहिं पवाय।
पुनि कराय शुचि आचमन बीरी देहिं बनाय ॥२२॥
इहि विधि कुंज शृँगार में कर भोजंन शृंगार।
दरपनमें लखि छबिजुगल कियोसरस बहुप्यार ॥२३॥

इति शृंगारकुंजकी भावना समाप्ता॥

अथ राजभोग कुंजभावना वर्ण्यते॥

दो० पुनि उठि दोऊ रसिक वर प्यारी पीय सुजान।
राजभोगकी कुंज को गवने कृपानिधान ॥ १ ॥
श्रीवन तरुन लतान तर झूमत घूमत लाल।
चलत चतुर अंकन भरत करत रँगीले ख्याल ॥ २ ॥
पहुँचे भोजन कुंज में सखियन जीवन प्रान।
गादी पै आजे जुगल प्रीत सहित सुख मान्न॥ ३ ॥
भूषन अंग विशेष जो सखियन धरे उतार।
मुदरी छल्ला आरसी यथायोग्य जिहिं वार ॥ ४ ॥
सन्मुख चौकी पर धर्यो राज्य भोग को थार।
सखरी अन सखरी सरस सामां विविध प्रकार ॥ ५ ॥
जमुनोदक सीतल सरस ढिग भरधर्यो गिलास।
विनय करी कर जोर सखि जैंवो बलि सुखरास ॥ ६ ॥
पावन लागे लाड़ले रुचि सों रसिक सुजान।
बोलि बोलि दें सखिन कों सीत प्रसादी दान ॥ ७ ॥
हँसि हँसि पावत प्रिया प्रिय देत लेत मुखग्रास।
स्वाद सराहत सुघर दोउ मंद मंद कर हास ॥ ८ ॥
अचवन कर बीरी लई दई सरस सुख मान।

फूलन के शृंगार कछु कीन्हें समय पिछान ॥ ९ ॥
सिंहासन बैठाय कर करी आरती नार।
दीठ डरन मनहरन के अंग अंग पर वार ॥१०॥
वारि वारि दोऊन पर पानी अलि सुकुमार।
पीवत प्रमुदित प्यार सों अपनों भाग विचार ॥११॥
सेज बिराजे जाय पुनि श्रीमत श्यामा श्याम।
उदय भयो दोऊन हिय परम प्रेम अभिरामें ॥१२॥
होन लग्यो तब परस्पर अद्भुत युगल बिहार।
कहन सुननकी गम नहीं समझ सैंन सुखसार ॥१३॥
चरनदासि श्रीसुख सखी दंपति प्रिया पिछान।
सेवा करें निकुंज मधि युगल भाव जिय जान ॥१४॥
रंध्रन है निरखें सखी धन्य जिन्हेंके भाग।
सेवा कर सुख महल को लूटें सह अनुराग ॥१५॥
भेष बदल बिपरीत रति रमत रसीली भाँत।
चोज मनोजन रँग रँगे फूले अंग न मात ॥१६॥
उरझ्योही जाने जुगल सुरझ न समुझें नाहिं।
कोन अटपटी प्रेम की दंपति अंगन माहिं ॥१७॥
प्रेम छकनि छाई दगन पौढ़े बिबि परियंक।
प्यारी पिय भुज में लसें ज्यों घन अंक मयंक ॥१८॥
अधरन सों अधरन मिला सोये बिबि सुख पाय।
स्वांस पवन लग कपोलन अलकें रही डुलाय ॥१९॥
स्वप्नावस्था के बिषे सूचित बृत्ति बिहार।
सरस माधुरी सरन के रसिक जुगल सरकार ॥२०॥

इति राजभोगभावना समाप्त ॥

अथ उत्थापनभावना लिख्यते ॥

दो० चार घड़ी जब दिन रह्यो बन के पंछी वृंद ।
चुह चुहान करबे लगे मधुर सुरन सों मंद ॥ १ ॥
वन विहार हित जुगल कों पंछिन दिये जगाय ।
डूबे भाव समुद्र में उठे हिये हुलसाय ॥ २ ॥
चिक परदा रँगमहल के अलियन दिये उठाय ।
सरस माधुरी कुंज में लीनी जुगल बुलाय ॥ ३ ॥
जल गुलाब सों जुगल के मुख परछाल कराय ।
फूलन के शृंगार कर दीने अंग सजाय ॥ ४ ॥
सारी लहँगा फूल के उपरेना अरु पाग ।
मुकट चंद्रिका आदि दै सजे सहित अनुराग ॥ ५ ॥
रचि सिंहासन फूल को बैठे दंपति फूल ।
नैना मधुकर सखिन के रहे रूप लखि भूल ॥ ६ ॥
बिजन चमर रचि फूल के ढौरत सरस सप्रीत ।
प्यार पगे बोलत वचन प्रकट करत रसरीत ॥ ७ ॥
बनफल कदली सेब सुठि अरु अमरूद अनार ।
आम अरँड ककड़ी सरस अरु अँगूर रुचिकार ॥ ८ ॥
हरितपत्र कदलीन की भर डाली अलियान ।
अरपन कर कहि प्रेम सों पावो जीवन प्रान ॥ ९ ॥
हँसि हँसि पावत परस्पर अलिन देत युग लाल ।
पुनि जल अँचयो प्रीति सों दंपति परम कृपाल ॥ १० ॥
बीरी आरोगी बहुर मंद मंद मुसकात ।
सुरस माधुरी सखिन सों करत रसीली बात ॥ ११ ॥

इति उत्थापनभावना समाप्त ॥

अथ वनविहारभावना लिख्यते ॥

दो० वनविहरन कों जुगलवर उठे सहित अनुराग ।
गलबैंयां देके चले गावत पीलू राग ॥ १ ॥
मंद मंद गवनत रसिक कुंज नृपति महराज ।
सेवा सामग्री सहित सँग सहचरी समाज ॥ २ ॥
छत्र चमर लिये कोउ सखी कोऊ मोरछल हाथ ।
पानदान लेकर सरस चली अली लै साथ ॥ ३ ॥
फूलन की कंदुक छरी गजरा चौसर माल ।
गुलदस्ता चकरी चतुर चली लियें बहुख्याल ॥ ४ ॥
आस पास सब सखीगन मध्य जुगल ममशान ।
लटकचलत दोउ लाड़िले बिहरत कुंजलतान ॥ ५ ॥
बैठ बहुर बारहदरी गावत हिलमिल गीत ।
कबहुँ गवावत सखिनकों करत रसिक अतिप्रीत ॥ ६ ॥
रतन चौंतरी चढ़ि कबहुँ ठाढ़े दोऊ दयाल ।
सूंघत फूल सुहावने मन में होत निहाल ॥ ७ ॥
मंद मंद गवनत कबहुँ कबहुँ चपलगति चाल ।
सुख उपजावत सखिनकों सरस बिहारी लाल ॥ ८ ॥
लुक लुक कुंजलतान में छुपत छबीले छेल ।
ढूंढ़गहत नव नागरी हँसि हँसि खेलत खेल ॥ ९ ॥
नारंगी की गेंदकर फेंकत गगन मँझार ।
लेत अधर निजहाथ अलि देत सु कर सरकार ॥ १० ॥
नींबू फल लेकर कभूँ तक मारत अलिअंग ।
हँसि छेड़त छबिसों छली अतिशय हरष उमंग ॥ ११ ॥
विनय करी तब सुख सखी चरनदासि करजोर ।

अब चलिये रँगमहल में प्यारे जुगल किशोर ॥१२॥
सरस माधुरी ता समय ले निजकर रूमाल।
श्रमकन श्रीमुख पोंछ के मन में भई निहाल ॥१३॥

इति बनविहारभावना समाप्त ॥

अथ संध्या समय की भावना लिख्यते ॥

दो० वनविहार बहु भांति कर संध्या समय निहार।
सिंहासन पर महल में आ बैठे सुकुमार ॥ १ ॥
सरस माधुरी ता समय अरप्यो संध्या भोग।
जेवँत दंपति प्रानधन अरसपरस संजोग ॥ २ ॥
जल सुगन्ध अचवाय पुनि बीरी दई बनाय।
डीठि हरन जल वार के सखिन पियो हरषाय ॥ ३ ॥
मणि दीपक दमकन लगे अद्भुत भयो उजास।
सरद चांदनी सै सरस तिनको परम प्रकास ॥ ४ ॥
वनश्रमगतहित आरती अलियन हिलमिलकीन।
अस्तुति कर बहुभाँति सों हरषि बलैयालीन ॥ ५ ॥
सुंदर साज मिलाय अलि नृत्य कियो हुलसाय।
गाय बजा दोऊन को लीने सरस रिझाय ॥ ६ ॥

इति संध्याआरतीभावना समाप्त ॥

अथ रासभावना लिख्यते ॥

दो० दंपति के मन में भई चाह करन रसरास।
सप्त सुरन आलाप ले नर्तन उमँग हुलास ॥ १ ॥
ताता थेई थेइ बोल मुख मंद मंद मुसिक्याय।
नचत नवल नागर दोऊ नानाभाव बनाय ॥ २ ॥
हिरन फिरन श्रीराहुरन छबि कछु कही न जाय।

भृकुटी बंक निसंक है नैना रहे मिलाय ॥ ३ ॥
छुवत छैल छलसों छमक अंग अलिन के आय ।
देत अधर रस सांवरो सखियन हिये लगाय ॥ ४ ॥
यह सुखरास बिलास को लिख्यो सखिन के भाग ।
प्रियाचरन आश्रित अलिन अबिचल लह्योसुहाग ॥ ५ ॥
सखी जुगल जीवनजरी जुगल सखिन के प्रान ।
अरसपरस की प्रीति को को करसकै बखान ॥ ६ ॥
लीला रासविलास कर ब्राजे कृपानिधान ।
अंग शृँगार बढ़ाय अलि समै सैन की जान ॥ ७ ॥
श्रीसुखसखि चरनदासि अलिअवसर उचितनिहार ।
बिंजन सरस सुहावने परसे कंचनथार ॥ ८ ॥

इति रासभावना समाप्ता ॥

अथ सैनभोग की भावना लिख्यते ॥

दो० गादी ब्राजे जुगलवर रसिक छबीले लाल ।
सैनभोग सामां सरस करत सुख सखी वाल ॥ १ ॥
सामग्री बहुभांति की घृत पकवान अपार ।
पूवा पूरी कचौरी लडुआ और सुहार ॥ २ ॥
शाक अचार सुहावने सेव सलोनी दार ।
फेनी बरफ़ी मुरब्बा मठरी मोहन थार ॥ ३ ॥
सरस जलेबी जानिये बासोंदी रुचिकार ।
मगद ठौर गूंझा धरे खरी लच्छेदार ॥ ४ ॥
ओट्यो दूध अनूप अति मिश्री मिश्रित जान ।
भर बेला सखियन धर्यो प्रेमप्रीत उर आन ॥ ५ ॥
पृथक् पृथक् सामां सरस परसी सुंदर थार ।

जेंवन लागे जुगलवर जीवन प्रानाधार ॥ ६ ॥
सैनभोग के पद सरस गावन लागी नार।
रुचि रुचि पावत प्रानपति अरसपरस कर प्यार ॥ ७ ॥
जमनोदक सीतल सरस कर अचवन तिहिंवार।
बीरी आरोगी बहुर मंद विहसि सकुमार ॥ ८ ॥

इति सैनभोगकीभावना सम्पूर्ण ॥

अथ सैनकुंज में शय्या और जुगलविहारीजूके जुगलविहार व सैन की भावना लिख्यते ॥

दो० सैनकुंज गवने जुगल ठाढ़े दे गलबांहि।
नैनन निद्रा झुकिरही आलस अंगन मांहि ॥ १ ॥
सैन आरती जोय अलि दंपति ऊपर वार।
पधराये सुख सेज पै सखियन के सरदार ॥ २ ॥
रेशम को गद्दा बिछो तकिया सजे अनूप।
पौढ़े तापर प्रानधन गौर श्याम रसरूप ॥ ३ ॥
ऋतु अनुकूल अनूप अति ओढ़ो बसन सुछन्द।
महक रही तामें महा अतरन की मकरन्द ॥ ४ ॥
कुंद केतकी मल्लिका माधविका के फूल।
धरे सेज के निकट अति ऋतुही के अनुकूल ॥ ५ ॥
रत्नन के भाजनन में भोजन साज अपार।
जलझारीं अरु पान की बीरी धरी सँवार ॥ ६ ॥
जथाजोग्य द्वारन विषे चिक परदा दिय डार।
चरनदासि श्रीसुख सखी मूंदे कुंजकिंवार ॥ ७ ॥
श्रीललितादिक सहचरी निजनिज रुचि अनुसार।
सेवा करी सनेह सों तन मन दीन्हें वार ॥ ८ ॥

श्री सुख सखि दोऊन कों स्वाये प्यार दुलार।
चरन पलोटन कों लगी चरनदासि तिहिंबार ॥ ९ ॥
मादक मधुर गिलास भर हितके बचन उचार।
पान करायो प्रेम सों सरसमाधुरी नार ॥१०॥

इति सैनकुंजभावना समाप्ता ॥

अथ श्रीजुगलविहारभावनावर्णन ॥

दो० पुनि सरस्यो श्रीजुगल के अंगन प्रेम अपार।
इच्छा उपजी जीय में बिलसन सरस बिहार ॥ १ ॥
रति बिपरीत रची भली श्रीराधे रसखान।
घनपर ज्यों दामिनि दिपै करत अधर पियपान ॥ २ ॥
चंचल चपलासी चमकि प्रीतम हिय लपटात।
किलकि पुलकि पियकंठसों लपटि लपटि हुलसात ॥ ३ ॥
लचकि लचकि नवलंकसों मचकि मचकि रस देत।
सीसी करके ससिमुखी अधरामृतरस लेत ॥ ४ ॥
रंध्रनलगि सहचरि सकल निरखत केलिनवीन।
दम्पति सरस विहार निधि भई लीन मनमीन ॥ ५ ॥
पियहिय पर श्रीस्वामिनी शोभा देत अपार।
मनु छबिलता सुहावनी लपटी तरुशृंगार ॥ ६ ॥
रससमुद्र दोउ रसिकवर उपजत केलि तरंग।
छलकि परी छबि द्रगन में सरसमाधुरी अंग ॥ ७ ॥
रसलोभी दंपति मह्य अधिक एक ते एक।
न्यारे होत न निमिषहू यहि दोउन हिय टेक ॥ ८ ॥
ऐसो अद्भुत प्रेम है दंपति अंगन मांहि।
रहत निरन्तर संग नित तऊ तृपति है नांहि ॥ ९ ॥

दंपति सुरति विहार में सुखसखि करैं सँभार।
मतवारे रस प्रेम में अलवेले सुकुमार ॥१०॥
निसिथिभोग भुगताय के सुखसखि परम सुजान।
वृत्ति विहार में मगन दोउ पौढ़े जीवन प्रान ॥ ११ ॥
स्वप्न अवस्था में दोऊ हिलमिल करैं विहार।
सरस माधुरीं गुरु कृपा यह सुख रही निहार ॥ १२ ॥
याही सुख में दिवस निस बीते कल्प अनंत।
ललित लाड़ली लाल की लीला को नहिं अंत॥ १३ ॥
रस में बीतैं रैन दिन होय सांझ पुनि भोर।
सरस माधुरी रीत सखि सेवैं जुगल किशोर॥ १४ ॥
लेकर वीन प्रवीन अलि नित प्रति जुगल जगाय।
अष्टजाम की रीति सों सेव करैं हुलसाय ॥ १५ ॥
नित्यधाम वृंदा विपिन रंग महल रस रास।
सरस माधुरी रीति सों दंपति करैं विलास ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीजुगलविहारभावना संपूर्णा ॥

अथ श्रीउज्ज्वलशृंगाररसभावना की महिमा वं प्राप्ति की रहस्य रीति वर्णन ॥

दो० नेति नेति निगमन कह्यो सो यह नित्य विहार।
जुगल कृपा कर पाइये और न कछू विचार ॥ १ ॥
दुरलभ नर तन पायवो भरतखंड में जान।
रसिक गुरू दुरलभ मिलन करे भक्तिरस दान ॥ २ ॥
पंच रसुन में मुख्य है उत्तम रस शृंगार।
भाव सहचरी धार उर सेवो युग सुकुमार ॥ ३ ॥
सुकृत उदै बहु जन्म के अपने लेहु पिछान।

रसिकन मिल रस रीति सों करो युगल गुन गान ॥ ४ ॥
ब्रह्मा सेस महेस को दुर्लभ रहस निकुंज।
सो सतगुरु की कृपा सों मिली तोहि रसपुंज ॥ ५ ॥
मत चूके अब दाव मन भलो बन्यों संजोग।
करो भावना महल की त्याग विषय जग भोग ॥ ६ ॥
चेत हेत कर जुगल सों सोवत कहा गँवार।
ऐसो उत्तम दाव फिर मिले न बारंबार ॥ ७ ॥
चूके तें बड़ हानि है लाभ चेत कर लेव।
करो भावना रैन दिन गुरु पद पंकज सेव ॥ ८ ॥
धन्यधन्य श्री सुख सखी चरणदासि धनि मान।
सरस माधुरीसरन कों कियो कुंज रस दान ॥ ९ ॥
धन्य धन्य श्री गुरु अली बलदेवी शुभनाम।
सरस माधुरी सरन के पूरे सब मन काम ॥ १० ॥
दई कृपा कर जुगल की सेवा महल निकुंज।
भाव मानसी सखी बपु बिलसूं रस की पुंज ॥ ११ ॥
श्रीललितादिक सहचरी अनगिन अली अपार।
जुगललाल की बल्लभा सेवें निज अधिकार ॥ १२ ॥
लीला जुगल दयाल की नित नव भांति अनंत।
गिनैं सेस अरु सारदा लहैं न तिन को अंत ॥ १३ ॥
न्यारो सब ब्रह्मांडतें निज वृंदावन नित्त।
माया काल कलेस तहँ व्यापत नाहीं मित्त ॥ १४ ॥
उत्पति परलै सों पृथक् स्वप्रकाश निज धाम।
सतचिद आनँद रूप मय अति सुन्दर अभिराम ॥ १५ ॥
करे मानसी भावना अष्ट जाम सह प्रेम।

समय समय करतो रहै तजे न यह नित नेम ॥ १६ ॥
सखी भाव श्री राधिका पद पंकज की आस ।
कृपादृष्टि श्रीगुरु अली मिलै निकुंज निवास ॥ १७ ॥
नाम रूप लीला ललित और जानिये धाम ।
इनकी सुदृढ़ उपासना करै रसिक निष्काम ॥ १८ ॥
तत्सुख सुख में नित सुखी रहै ध्यान लव लीन ।
गुप्त करे निज भावना रसिकन सों रहै दीन ॥ १६ ॥
संग सजातिन को करै देहि विजाती त्याग ।
ऐसी रहनी सों रहै लहै अचल अनुराग ॥ २० ॥
जुगल नाम जपिये सदा मुख सों बारम्बार ।
बिना समर्पित वस्तुको करै न अंगीकार ॥ २१ ॥
जब लों जीवै जगत में भाव मानसी राख ।
श्री कुंजविहारिनि राधिका श्याम नाम मुख भाख ॥ २२ ॥
तीन अवस्था तीन वपु तिनको लेहु पिछान ।
तुरियातन निज जान मन दम्पतिसँग सुखमान ॥ २३ ॥
पञ्च भूतकी देह तजि रंग महल में जाय ।
रहै सदा दम्पति निकट सेव करै हुलसाय ॥ २४ ॥
युगल मिलन मारग यही सतगुरु दियो बताय ।
सरस माधुरी भाव में निसदिन रहै समाय ॥ २५ ॥
श्रीबलदेवी स्वामिनी मम गुरु दीनदयाल ।
सरस माधुरी सरन की सदा करैं प्रतिपाल ॥ २६ ॥

इति श्रीअष्टजामसेवाभावनाविलासश्रीशुकसम्प्रदायआश्रितश्रीयुतसद्गुरुस्वामी बलदेवदासजीमहाराजके चरणसेवक पंडितशिवदयाल निकुञ्ज सम्बन्धीनाम सरसमाधुरीसरनरचित सम्पूर्णम् ॥
श्रीराधासरसबिहारीलाल अर्पणमस्तु ॥

श्रीराधेश्याम जय जय श्यामा श्याम ॥ दोहा संख्या—मंगला भावना के ॥ २६ ॥ वन शोभा के ॥ ८ ॥ स्नान कुंज के ॥ ६ ॥ श्रृंगार कुंज के ॥ २३ ॥ राज भोग कुंज के ॥ २० ॥ उत्थापन कुंज के ॥ ११ ॥ वनविहार के ॥ १३ ॥ संध्या समय के ॥ ६ ॥ रास भावना के ॥ ८ ॥ सैन भोग के ॥ ८ ॥ सैन कुंज के ॥ १० ॥ युगल विहार के ॥ १६ ॥ श्रृंगार रसकी महिमा व प्राप्ति की रहस्य रीति के ॥ २६ ॥ सर्व समुदाय दोहा संख्या ॥ १८१ ॥

———:o:———

श्रीराधासरसविहारिणे नमः ॥

अथ श्रीयुग्मनिकुंजविहारी अष्ट याम सेवापद लिख्यते।

———:o:———

श्लोक। जयति जयति राधाकृष्णकैशोरकान्ति र्जयति जगति कृष्णाऽगारतन्वी शुकाली॥ अमरभुवनपत्नीरत्नयूथेश्वरीच जयतिचरणदासी श्रीरसाचार्य्यमूर्त्तिः ॥ १ ॥ परमानन्दंपरमपददं केवलं प्रेम मूर्त्ति मायातीतं सुभगवपुषं रासलीलादिलक्ष्यम् ॥ कुंजे सेवाकुशलममलं सर्वदा सुप्रसन्नं भावाधीनं भवभयहरं सद्गुरुं तन्नमामि ॥ २ ॥

दो० कृपासिंधु सत गुरु प्रभो श्रीबलदेवजु दास।
पद बन्दन तिनके करूँ आनँद मंगल रास ॥ १ ॥
अष्ट याम सेवा सुपद रसिकन जीवन प्रान।

सरस माधुरी रचत है श्रीगुरु उर धर ध्यान ॥ २ ॥
जिन्हें दई गुरु भावना सहचरि वपु सुकुमार ।
कुंज महल की टहलको तिनही को अधिकार ॥ ३ ॥
नाम कुंज सम्बन्ध को अरु सेवा गुरुदीन ।
ताको अनुसन्धान कर सेवहु युगुल प्रवीन ॥ ४ ॥
दृढ़ अनन्यता धार हिय तत्सुख रख उरभाव ।
सरसमाधुरी मानसी सेवा कर चित चाव ॥ ५ ॥

अथ मङ्गल समय की भावना वर्ण्यते ॥

प्रथम श्रीशुकसखी श्यामचरणदासीजी की बन्दना के पद ॥

राग कालंगड़ा—जय शुकसखी श्यामचरणदासी रस-विलासी प्राण पियारी। अष्टयाम सेवा सुख लूटत अष्टभाव सुन्दर वपुधारी ॥ अष्टनाम प्रति कुंजनिकुंजन सेवत दम्पति रुचि अनुसारी । लिये रिझाय लाड़िली लालन पल छिन होत नेक नहिं न्यारी ॥ स्ववश किये निज प्रेम प्रीति सों श्रीराधावर कुंजबिहारी। चायन भरी रूपरस माती गुप्त प्रगट लीला अधिकारी ॥ श्रीयूथेश्वरि रस आचारज बिनय सुनो मोहिं दीन निहारी । देव निकुंज निरन्तर सेवा सरसमाधुरी शरण तुम्हारी ॥

अथ श्रीमंगलाकुञ्जभावना पद ॥

दो० वै किशोर लावन्यनिधि बसन्त चम्पई रंग ।
सेवा स्तवगान की प्रेमपुलक अँगअंग ॥ १ ॥
ज्वालमणिन सों जगमगत कुंज मंगला ऐन ।
अतुलित रचना है तहां कहत बनत नहिं बैन ॥ २ ॥

अग्र मंगला कुञ्ज के सुन्दर बर दालान।
बीन लियें कर सुखसखी करन लगी कलगान ॥ ३ ॥
श्यामचरनदासी सखी लै परिकर निज संग।
सेवसोंज ले कर खड़ी हियमें हर्ष उमंग ॥ ४ ॥
अरुण चम्पई वस्त्रवर नखशिख साजि शृंगार।
रस आचारज यूथपति शोभित कुंज अगार ॥ ५ ॥

राग आसावरी व बिलावल—रंगमहल के द्वार सुकर लै बीन मधुर सुख सखी बजाई। तानतरंग रंग बर्षाकरि दम्पति तनमन दिये छकाई ॥ जागे अनुरागे पियप्यारी मन्द हँसत मुख लेत जँभाई। उठि बैठे सुख सेज रसीले रति रस नैन छई अरुनाई ॥ माल मरगजी खंडित बीरी रीझिदई निज निकट बुलाई। सरस माधुरी रूप दृगन लखि वारि दोउ कर लई बलाई ॥

सखियन के जगायबे को पद राग बिलावल ॥

जागो जुगल लाल बलिजाऊँ। अरुणोदय परभात भयो है मंगल आरति कर हुलसाऊँ ॥ पुनि मुख कमल धोय दोउन को मंगल भोग सुमधुर पवाऊँ। जमुनाजल अँचवाय प्रेम सों मंगल समय सरस पद गाऊँ ॥ श्री शुकसखी श्यामचरनदासी पद बन्दन करत न पुलकाऊँ। सरस माधुरी छबिकों निरखूं हरखूं हिय माहीं सुखपाऊँ ॥

यथा पद राग कालंगड़ा—भोर भई जागो बलिजाऊँ श्यामा श्याम पियारे। रसिकराय चूड़ामणि दम्पति जीवन प्राण हमारे ॥ पहुपीरी मारुत बहे सीरी छिपे गगन के तारे। चटकत कली गुलाब सुमन सुठि गुंजत अलि मतवारे ॥ उदित भानु अवसर निघरानो कमल खिलत हैं न्यारे। लता पता में

पक्षी बोलत गावत सुयश तुम्हारे ॥ आई श्यामचरण की दासी सेवसोंज कर धारे। मंगल भोग फूलफल चन्दन धूप दीप धर थारे ॥ युगुल दरस की प्यासी दासी खड़ी कुंज के द्वारे। नैन चकोर रूपरस पीवन तव मुख चन्द उजारे ॥ सरसमाधुरी बीन बजाई मंगल गान उचारे। सुनिधुनि जगे दरस निज दीनों सखियन तन मनवारे ॥

पद सिन्धु भैरवी–जागे जुगल उनीदे नैना। आलस गात जँभात रसीले तुतराते बोलत मुख बैना ॥ बिथुरे बार हार उर उरझे सुरझावत सुन्दर सुख देना। अंजन अधरन पीक कपोलन लखि लखि पावत हैं उरचैना ॥ अरस-परस निरखत छबि दम्पति देखत लजत रती अरु मैना। सरसमाधुरी या जोरी की उपमाको त्रिभुवन में हैना ॥

राग बिलावल यथा पद–निरखोरी छबि जुगल अंग की ॥ फूलमाल मोतिन की माला उरझि रही अनुराग रंग की। कुच केसर तनमें लपटानी छलक छटा रतिरंग जंग की ॥ सुमन सेज कुम्हलानी सयानी रैन करी केली अनंग की। सरसमाधुरी मगन भई लखि सखी सहेली सकल संग की ॥ १ ॥ देखोरी छबि युगुल ललन की। छूटी अलक कपोलन ऊपर अद्भुत शोभा सखी हलन की ॥ टेढ़ी बेंदी लसी भालपर भौंह लजानी भरी छलन की। सरसमाधुरी दम्पति शोभा निरख नागरी नाहिं टलन की ॥

दो० बैठे बिबि परियंक पर हँसि हेरत मुसिक्यात।
प्रेमभरे नैना जुरे करत परस्पर बात ॥

श्रीप्रीतम बचन पद राग आसावरी बिलावल ॥

सुनहु किशोरी जीवनि मोरी निसदिन अंग संग अभिलाखूं।

मिल्यो रहत तउतृप्ति न मानत तेरी सोंह सत्य मुखभाखूं ॥ तव मुख निरखि नवेली जीऊं अधर सुधारस हितकर चाखूं। सरसमाधुरी मूरति तेरी मैं नितही निज हियमें राखूं ॥

श्रीप्रियाजू वचन यथा पद ॥

मम जीवनधन मदन मनोहर प्राणनाथ प्राणन तें प्यारे। निसदिन दियें रहत गलबैंयां तन मन मिले नहीं छिन न्यारे ॥ तउतृषा नित रहत मिलन की तृप्ति न मानत प्राण हमारे। कासि कासि पिय कहि अकुलाऊँ नैन दरस हित होत दुखारे ॥ यह संजोग विरह की बेदनि बनी रहत उर अन्तर हारे। सरसमाधुरी चाह चटपटी घटत नहीं प्रगटत नित प्यारे ॥

सखी पद राग कालंगड़ा ॥

दम्पति की प्रीति रीति सजनी कुछ न्यारी है। श्याम संग राधे को श्यामा सुठि नाम भयो प्यारी सँग प्यारो नाम पायो श्री बिहारी है ॥ श्याम अंग रंग सदृश नीलांबर सजत प्रिया कञ्चन द्युति प्रिया पीय पीताम्बर धारी है। नव घन घनश्याम घटा प्यारी छवि बिद्यु छटा परिकर अलि मनमयूरि जीय की जिवारी है ॥ कनकबेलि प्रिय रसाल लपटी पियतरु तमाल तऊ बिरह बस बिहाल संभ्रम हिय भारी है। सरसमाधुरी सरूप पीवत रस युगल भूप तदपि तृषित रहत लाल लाड़िली हमारी है ॥

दो० भोग मंगला थालभर सखियन धर्‌यो सँवार।
सन्मुख श्यामा श्याम के मंगल समय निहार ॥

पद राग कहरवा—जेंवत हिलमिल जुगल बिहारी। कंचनथाल धर्‌यो चौकीपर मंगल भोग विविधि परकारी ॥ दधि

माखन अरु मिश्री मेवा मालपुवा मोदक रुचिकारी। कचरी पपरी सेव सलोनी और मधुर बहुभांति तयारी ॥ जमनोदकझारी रुचिकारी अचवत हैं प्रीतम अरु प्यारी। सरसमाधुरी निज सेवा लखि बीरी दई कर बहु मनुहारी ॥

यथा पद भोग—मंगलमय भोग प्रिया प्रीतम मिल पावें हैं। कंचन सजि थार धर्‌यो चौकीपर दम्पति ढिग मिश्री सदमाखन दधि अलिगन पुरुसावें हैं ॥ मालपुवा मोदकबर घेवर फैंनी सुहार रुचि के अनुसार नारि प्रेम सों पवावें हैं। दार सेव अदरक नमकीन फली तली भली कचरी अरु पापर पा हिय में हरखावें हैं। अँचवन करवाय जमुन शीतल जल प्याय सखी कमल मुख अँगोछपोंछ हेत हिय जनावें हैं ॥ सरसमाधुरी निहार बीरी मुख दइ सँवार हँसि हँसि आरोग जुगल मोद मन बढ़ावें हैं ॥

मंगल आरती पद—मंगल आरति हरख उतारी। मंगल कुंज महल बृन्दाबन मंगल मूरति प्रीतम प्यारी ॥ मंगल गानतान धुनि छाई बीन मृदंग बजें सुखकारी। मंगल सखी समाज मनोहर मंगल धूप महक मतवारी ॥ मंगलमय नित उत्सव मंगल मोद बिनोद प्रमोद अपारी। सरसमाधुरी निसदिन मंगल जिन छबि मंगल निज उरधारी ॥

दो० श्याम चरनदासी सुघर मंगल समय पिछान।
जुगल लाल स्तव उमँग करन लगी सुखगान ॥

स्तुति पद भैरवी—जय बृन्दाबन चन्द छबीले गौर श्याम सुखदानी। रूप सुधारस दृगन चकोरी दम्पति दरस लुभानी ॥ जय श्रीराधे रसिक रसीली जय रसिया रसखानी। रसमें मगन रहत रसरासी नित रसकेलि कहानी ॥ जय जय अधर मधुर रस

मादक पीवत नाहिं अघानी । जय जय केलिकला रसकोबिद श्रीठाकुर ठकुरानी ॥ जय परियंक निसंक बिलासी रति वर्धन रसदानी । नेति नेति बचनामृत बोलत प्यारपगी मृदुबानी॥ जय जय जुगल अलिन की जीवनि बार पियत नित पानी । सरसमाधुरी सर्वस मेरी निसिदिन निरखि सिहानी ॥

दो० अस्तव सुनि हरखे युगल जीवन प्राण अधार ।
गलबैंयां दे लाड़िले खड़े कुंज के द्वार ॥

पद भैरवी–जुगल के नैन छई अलसान ॥ घूमत झूमत झुकत छबीले प्यारी प्रीतम प्रान । उठे जँभात सिथिल पट भूषन सुन्दरता की खान ॥ अधरन अंजन रेख सुहावन पलकन लीक पीक सुखदान । करत निरन्तर प्रगट प्रेम रस आलिंगन चुम्बन सन्मान ॥ सरस माधुरी अधर सुधारस पीवन की नित बान ॥ १ ॥

कुंजद्वार ललना अरु लालन ठाढ़े दै गलबांहीरी । मूँद मूँद खोलत चख चंचल अंचल की सुधि नाहींरी ॥ झुकि झुकि जात परस्पर दोऊ आलस अंगन माहींरी । मुख अम्बुज मकरन्द प्रकासित ज्यों ज्यों ले जमुहाहींरी ॥ बिथुरे बार कपोलन ऊपर श्रमकन मुख झलकांहींरी । सरसमाधुरी स्रवत सुधारस अलि पीवत न अघाहींरी ॥ २ ॥

महल आंगन ठाढ़े पिय प्यारी । अंसन भुजधर मदनमनोहर नैनन सुरति खुमारी ॥ नील पीतपट भूषन पलटे भूले सुधि बुधि सारी । सरसमाधुरी छके प्रेम में छैल छबीले भारी ॥

फुलवाई निरखन पद भैरवी ॥

कुंजभवन के आँगन दम्पति देखत हैं फुलवाईरी । बेली नवल चमेली हेली हरित अनेकन छाईरी ॥ ठुमक चलत चंचल

चहुँओरी सघन लता तर जाईरी । मन्द बिहँसि कर अंक भरत हैं मुख चूमत हरषाईरी ॥ निरखि नैन पुष्पन की शोभा लालरहे ललचाईरी । सरसमाधुरी सुठि सुगन्ध शुचि सूँघत नाहिं अघाईरी ॥ १ ॥ विहरत नजर बगीची लालन। घूमत फिरत करत कौतूहल मदगज़ चलत चतुर दोउ चालन ॥ फूलन के चौंसर अरु गजरा लेआई डलिया भर मालन । सरसमाधुरी अंग सजाये रीझि मिले चुम्बन कर गालन ॥ २ ॥ फूलि फूलि देखत फुलवाई । फूली लता चहूंदिशि शोभित त्रिबिधि समीर बहत सुखदाई ॥ फूलन की क्यारीं बहु न्यारी सुरुचि सुगन्ध रही महकाई । सरसमाधुरी रस मतवारे पीवत अधर मधुर मुसिकाई ॥ ३ ॥

दो० समय जानि श्रीसुखसखी चरणदासि गुनखान ।
पुष्प पाँयते सरस रचि लाई कुंज अस्नान ॥

स्नानपद राग भैरवी ॥

मंजु कुंज सुख पुंज सदन में पियप्यारी असनान करेंरी । वे उनको वे उन्हें न्हवावत हँसि हँसि कसि कसि भुजन भरेंरी ॥ किलकत पुलकत प्रेम पगे दोउ निज सखियन को चित्त हरेंरी । जलझारी सहचारी लीन्हें रूप रसामृत नैन भरेंरी ॥ भीजे बार निचोरत निजकर मुक्तावत जलबिंदु झरेंरी । सरसमाधुरी अंग जुगल की दृग तें टारी नाहिं टरेंरी ॥

पद राग आसावरी–युगल के अंगन पट पहराये। गीले वस्त्र उतार सहेली सुंदर बसन सजाये ॥ धोती उपरेना सुठि सारी सखियन साज सजाये । नीलांबर पीतांबर दंपति पहर हिये हरषाये ॥ कँगहीसों रचि केश सँवारे अलकन अतर रमाये । सरसमाधुरी श्याम राधिका सिंहासन पधराये ॥ १ ॥ युगल को

अलि बाँधो कसि जूरो। रेशम डोर रँगीली लैकर रच्यो अधिकही रूरो॥ बिच बिच मुक्ता ललित लगाये प्रिया माँग रचि दियो सिँदूरो। सरसमाधुरी दंपति मुखपर वारों कोटि शरद शशि पूरो॥२॥

दो० मणिमय मंजुल थाल में पिस्ता और बदाम।
मिश्री मिश्रित कलेऊ लाई अलि अभिराम॥
मोदक मेवा विविध विधि मोहनभोंग रसाल।
मधुर मलाई मनहरन पावत प्यारी लाल॥

पद कलेऊ राग कालंगड़ा॥

करत कलेऊ प्रीतम प्यारी। मोहनभोग मलाई मिश्री मोदक मेवा विविध प्रकारी॥ जीमन लगे सखिन की जीवन अरस परस कर बहु मनहारी। सरसमाधुरी ले जमुना जल अँचवायो श्री कुंजविहारी॥

श्रृंगार कुंज वर्णन पद भैरवी॥

कुंज शृंगार सदन में दोउ पिय प्यारी अनुरागेरी। पहिरें पीत बसन आभूषण परम प्रेममें पागेरी॥ पीत मणिन सों कुंज प्रकाशित निरखि सकल दुख भागेरी। सखी समाज साज सजि पियरो खड़ी सेव में आगेरी॥ सोंन जुही अरु पीत चमेली फूले फूल सुभागेरी। जित देखूं तित पीत साज सब ऋतु बसंत सम लागेरी॥ सतगुरु कृपा लह्यो सखि यह सुख भाग भले अब जागेरी। बसौ अचल छबि युगल लाल उर सरसमाधुरी मांगेरी॥

श्रृंगार पद—युगल बर कर शृंगार विराजे। गौर श्याम अभिराम रसिक बर सुभग पीतपट साजे॥ मुकुट चन्द्रिका नख शिख भूषण अंग अंग छबि छाजे। गल फूलन के हार मनोहर निरखि काम रति लाजे॥ गान तान गावत अलि अनगिन

नाचत करत 'समाजे। सरसमाधुरी हँसि मुसकावत सखियन के सिरताजे॥ १॥ प्रिया तन ऋतु बसंत छवि छाई। पीत बसन पियरे आभूषण चंपक बरन सुहाई॥ पीत चमेली चौसर गजरा केसर खौर लगाई। नैन खिले अरबिंद अनोखे रस मकरंद चुचाई॥ नाना रंग फूल सजि सुन्दर फूली मनु फुलवाई। कोकिल बचन बोलि अल-बेली पिय मन लियो चुराई॥ हँसन दसन दुति कुंद कलीसी बिंबाधर मधुराई। पान करन रस सरस माधुरी आलि अवली मिलि आई॥ २॥

दो० जान सु अवसर सहचरी लाई भोग श्रृंगार।
मधुर सलोने चरपरे भरकर कंचन थार॥

पद श्रृंगार भोग॥

भोग श्रृंगार युगुल मिलपावैं। पूआ पूरी और कचौरी जेंवत अरस परस मन भावैं॥ खड़ी मावा और मुरब्बा त्रिविध अचार गिने नहिं जावैं। खाजा खुर्मा दूध मलाई फेनी घेवर रुचि उप-जावैं॥ दही तिकोने सेव सलोने शाक अनेकन भांति सुहावैं। आरोगंत रुचि सों अलबेले सखियां हिलमिल मंगल गावैं॥ अचवन करि आरोगी बीरी हँसि हँसि सखियन सों बतरावैं। सरसमाधुरी छकी दरस छबि दम्पति को दर्पन दिखलावैं॥

श्रृंगार आरती राग बिलावल॥

करत श्रृंगार आरती आली। नख शिख सजे नवल पट भूषण सजि धजि अद्भुत भांति निराली॥ निज मुख छबि ले मुकर निहारत अधर रची पाननकी लाली। मंद हँसी हिय बसी सखिन के कसकत है नहिं जाय निकाली॥ फूल रह्यो फूलन सों श्रीवन सौरभ महक महा मतवाली। करन बलैयाँ ले दम्पति की सरस माधुरी रहत खुशहाली॥

अथ शृंगार सन्मुख के पद ॥

रँगीले दोउ रंग भरे बतरावें। रूप रासि रसिकन की जीवनि मंद मंद मुसकावें॥ अति आशक्त अंस भुज दीने नैन सों नैन मिलावें। सरस माधुरी अधर सुधारस हिलमिल पीवें प्यावें॥ १॥ मेरो मन मधुकर अंत न जावे। छांड़ मुखाम्बुज युगल लाल को और कहाँ सुख पावे॥ श्वास गन्ध मकरंद माधुरी सूँघन को ललचावे। अलक कपोल गोल अधरन पै मदमातो मँड़रावे॥ बेसर और बुलाक विलोकत अति आनंद बढ़ावे। सरस माधुरी रूप सुधारस पीवत नाहिं अघावे॥ २॥ रसीले दोउ रस की केलि करें। नैन सैनं में मन मोहत हैं हँसि हँसि भुजन भरें॥ अति सुकुमार मार मद मोचन चितवत चित्त हरें। सरसमाधुरी छबि उरधारी टारी नाहिं टरें॥ ३॥ रमेरी मेरे मन में राधेश्याम। रसना श्यामा श्याम कहत है रटत निरंतर नाम॥ श्री मत युगलकिशोर किशोरी कियो हिये में धाम। सरसमाधुरी चरन कमलकी चेरी आठोंजाम॥ ४॥ सलोने लागें नवल किशोर किशोरी। सुन्दर श्याम काम मद मोचन सुमुखि सुलोचनि गोरी॥ मिलि बैठे दोउ रत्न सिंहासन हँसि लीनों चितचोरी। सरसमाधुरी इनके सम कोउ त्रिभुवन में नहिं जोरी॥ ५॥ हमारी हेली जीवनि युगल बिहारी। रूप निरखि निशदिन में जीऊँ पीऊँ अधर सुधारी॥ छिन छिन लखों रंक के धन ज्यों अँखियां टरत न टारी। सरस माधुरी बसी हिये में बिसरत नाहिं बिसारी॥ ६॥

शोभा शृंगार पद ॥

युगल छबि आज अनोखी लागे। सजि शृंगार डार गरबैंयां

पिय प्यारी अनुरागे ॥ मृदु मुसिक्यात गात अति पुलकित परम प्रेम में पागे । सरस माधुरी दृगन बसो दोउ बार बार यहि माँगे ॥ १ ॥ युगल छबि निरखो नैन नवेली । मन मोहन सोहन तन सुन्दर झांकी अति अलबेली ॥ चितवन में चित चोरत चंचल करत रसिक रस केली । सरसमाधुरी रूप रसामृत हिल मिल पीवो हेली ॥ २ ॥ युगलकी झांकी है रँग भीनी । जोवन अंग उमंग भरी है रति अनंग छबि छीनी ॥ रसिक किशोर किशोरी गोरी जोरी रूप नवीनी । सरस माधुरी हँसि हेरन में सखियां रस बस कीनी ॥ ३ ॥ युगल छबि नैनन बीच बसी । रसमाते रस रङ्ग करत हैं जादू मन्द हँसी ॥ तिरछी चितवन तीर चलावत भौंहँ कमान कसी । सरसमाधुरी घायल कीनी फंदे प्रेम फँसी ॥ ४ ॥ छबीले दोऊ छबि सों कुंज बिराजे । नख सिख सज शृंगार सलोने देखतही दुख भाजे ॥ प्यारी कमल लिये कर फेरत पिय कर बंसी राजे । सरसमाधुरी के सरबस धन निरखि काम रति लाजे ॥ ५ ॥

दो० श्रीसुख सहचरि चरन अलि दंपतिको मन मेलि ।
जान सु अवसर युगल को खिलवत चौसर केलि ॥

राग टोड़ी—चौसर खेलत सारन चालि के । पासा फेंकि करत कौतूहल रूप छटा अंगन में छलके ॥ नासा मोती बोलत मटकत बिथुरी कलित कपोलन अलके । सरसमाधुरी स्वेद मुखन पर मानो मोती कन से झलके ॥ १ ॥ चौसर खेल रच्यो पिय प्यारी । फेंकत पासा प्रेम परस्पर मारत सार रसिक रिझवारी ॥ झगरत निज निज दाव नवलवर करगहि हँसि हँसि भरि अँकवारी । सरसमाधुरी होड़ा होड़ी चलत चाल जुग वारम्बारी ॥ २ ॥

होड़ बदी रतिकी रँगभीनी । जो हारे दोउन में कोऊ करे केलि रसरंग नवीनी ॥ जीती प्रिया हार पिय की भइ पीताम्बर मुरली तब छीनी । सरस माधुरी नटनागर ने बहुत भाँति रुग टैयां कीनी ॥ ३ ॥ होड़ हार की माँगत प्यारी । सुनहु ढीठ लंगर मन मोहन अब कहु मौन कौन बिधि धारी ॥ सकुच रहैं कछु कहैं न मुख सों सखियां बिहँसि बजाई तारी । सरसमाधुरी चूमि लाल मुख प्रियालई पिय की बलिहारी ॥ ४ ॥ श्यामा लखे श्याम सकुचाये । बैठे हार उनमने लालन बोलत नहिं मन में शरमाये ॥ तब करुणाकर कुँवरि किशोरी रमक भुजन भर कंठ लगाये । अधरामृत सों सींचि स्वामिनी सरसमाधुरी रसिक छकाये ॥ ५ ॥

दो० दो चौकी गादी बिछा तकिया दिये लगाय ।
पधराये प्रीतम प्रिया प्रीति रीति के भाय ॥ १ ॥
दंपति के सनमुख बिछा चौकी कंचन चारु ।
थार भरो धर भोग को सामाँ अमित प्रकार ॥ २ ॥
युगलकमलकरयमुनजल धोयपोंछहितमान ।
करी विनय आरोगिये राजभोग सुख दान ॥ ३ ॥
बाम दक्ष दिशि सहचरी सामाँ पुरुसन हेत ।
खड़ी भई बिंजन लिये दंपति रुचि लखि देत ॥ ४ ॥
अरस परस जेंवन लगे प्रीतम प्यारी प्रान ।
साज बाज ले सहचरी लगी भोग पद गान ॥ ५ ॥

फूलकुंज में राजभोग पद राग सारंग ॥

राजभोग जेंवत पिय प्यारी । कंचन थाल अनेक कटोरी सामग्री तिन माहिं अर्पारी ॥ सादा भात केसरी सुन्दर कढ़ी पकोरी दाल बघारी । फुलका लघु लोने अति अद्भुत सुरभीघृत तिनमें

रुचिकारी ॥ सिखरन खीर बरा बासोंधी टेंटी पापर बहु तरकारी । कचरी फली तली अति लोनी और मुँगौरी अदरक न्यारी ॥ रुचिर रायते नुकती किशमिश पोदीना चटनी चटकारी । मठा मधुर अमृस दधि माखन मिसरी मिश्रित स्वाद महारी ॥ नींबू आम अचार करोंदा मधुर मुरब्बा अति मनुहारी । मोहनभोग जलेबी मोदक लुचई घेवर सरस सुहारी ॥ मठरी मोठ दाल अरु बरफी षटरस व्यंजन विविध प्रकारी । सखरी अनसखरी बहु सामां कहँलों बरनों रसना हारी ॥ अरस परस मनुहारत दंपति प्रियहि पवावत कुंज बिहारी । यह सुख देख सखी सुख प्रमुदित रीझ रहत बिबि बदन निहारी ॥ श्याम चरन दासी सुखरासी मगन युगल रसमें मतवारी । सरसमाधुरी श्रीदंपति की छवि लखि मुख बोलत बलिहारी ॥ १ ॥ भोजन करत भावते प्यारे । छप्पन भोग छतीसों व्यंजन खटरस मिठरस न्यारे न्यारे ॥ सामग्री सखरी अनसखरी नाना शाक अनेक अचारे । सरसमाधुरी रसके लोभी लेत देत मुख ग्रास न हारे ॥ २ ॥ राजभोग दम्पति मिल पावें । निज निज हाथ निहोरि नवीने वे उनको वे उन्हें पवावें ॥ नैन निहार रहें मुख दोऊ चिबुक परसि इकटक रहिजावें । कबहूँ करें केलि कौतूहल हँसि हँसि पानि कपोल छुवावें ॥ व्यंजन भूख भगी दम्पति की रस भोगी रति को ललचावें । सरसमाधुरी सेनन माहीं पियत रूपरस नाहिं अघावें ॥ ३ ॥ जेंवत युगल रसिक पिय गोरी । देखहु हगन निहारि सहेली रस ज्योंनार रची इकठौरी ॥ तनको थाल अंग सामग्री छवि के व्यंजन को परसो- री । भाव भोग भोगत गरवीले पियत रूपरस नैनन सों री ॥ तृपति न होत परस्पर प्यारे लखि ललचानी अँखियां मोरी । सरसमाधुरी

सीत प्रसादी दीजे तनिक किशोर किशोरी ॥ ४ ॥ रसभोगी रस लोभी रसिया । रस में मगन लगन रसही की रस के फन्द रहे नित फसिया ॥ रस बोलनि रस केलि कलोलनि छबि को देखि दृगन दोउ हँसिया । सरसमाधुरी रसिक शिरोमणि रसरासी मेरे मन बसिया ॥ ५ ॥

आचमन पद सारंग ॥

अचवन करत नवल पिय गोरी । श्री यमुनोदक शीतल सुन्दर पीवत कुँवर किशोर किशोरी ॥ ले रूमाल कमल कर पोंछत तन मन तृपति नैनलखि जोरी । सरस माधुरी मूरति दम्पति सुन्दर श्याम स्वामिनी मोरी ॥

बीरी पद—बीरी सरस सखी रुच दीनी । लई प्रीति कर प्रीतम प्यारी अधरन लाली लसी नवीनी ॥ मृदु मुसकात बात हँसि बोलत सुनत सहेली रस में भीनी । सरस माधुरी सैंन करन की युगुल लाल मन इच्छा कीनी ॥

आरती पद—फूल आरती कर हुलसावें । अंग अंग पर वार अलीगन फूली तन मन नाहिं समावें ॥ फूल कुंज ब्राजे पिय प्यारी चहुँ दिसि परदा फूल सुहावें । जाली फूल निराली आली फूलन सेज सजी छबि छावें ॥ फूल सिंगार साजि सजि दम्पति बैठे मन्द मन्द मुसकावें । सरस माधुरी छवि लखि फूली युगुल चन्द की बलि बलि जावें ॥

मध्यान शयन पद सारंग राग ॥

कीजिये युगुल लाल आराम । राज भोग आरोग भली विधि आय गयो जुग जाम ॥ सुमन सेज सजि लीनी सखियन लता

कुंज अभिराम । हिल मिल पौढ़ि परम सुख लीजे कीजे पूरण काम ॥ सुन बिनती सखियन की दम्पति सोये सुख के धाम । सरस माधुरी रस के माते कुँवरि किशोरी श्याम ॥ १ ॥ फूल सेज सोये पिय प्यारी । फूलन के शृंगार धार तन हिल मिलके गल बैंया डारी ॥ फूलन के गद्दा अरु तकिया फूलन कसना कसे सँवारी । फूलनही के फ़र्श ग़लीचा फूल बिछायत कुंज मँझारी ॥ बारहदरी बनी फूलनकी सुन्दर दर दालान तिबारी । फूलन के लटकन लूमत हैं फूलनहीं की बन्दनवारी ॥ सीतल मन्द सुगन्ध सुहावन पवन चलत अति आनँदकारी । सरस माधुरी केलि युगुलकी जीवन प्राण अधार हमारी ॥ २ ॥

दो० राजभोग कर रसिक बर सोये बिबि सुकुमार ।
रंध्रनलगि नवनागरी निरखत युगुल विहार ॥

प्रमोद कुंज वर्णन ॥

दो० सोय उठे त्रतिये पहर युगुल विहारी लाल ।
उत्थापन आरति करन लगी सुख सखी बाल ॥
अंग अंग प्रीतम प्रिया वारि फेरि ततकाल ।
श्याम चरण दासी सखी छबि लखि भई निहाल ॥

उत्थापन पद राग धनाश्री ॥

जागे जीवन प्राण युगुल वर । आय सुख सखी धोय कमल मुख जमुना जल प्यायो अपने कर ॥ फूलमाल पहराय दोउन को बनफल अरपे अति आनँद भर । पावत प्रमुदित प्यारी प्रीतम छैल छबीले लाल मनोहर ॥ श्याम चरण अलि करत मोरछल गावत अलिगन राग मनोहर । सरस माधुरी साज बाज मिल तान तरंगन को लागो झर ॥

राग पीलू बरवा—सोय उठे दम्पति सुखरासी। घिरिआई चहुँ ओर सखीगण युगुल रूप रसकी अति प्यासी॥ जल सुगंध युग धोय कमलमुख पटसों पोंछ प्रेम अभिलासी। लै यमुनोदक पाय परम शुचि अंतर प्रीति प्रतीति प्रकासी॥ किशमिश पिस्ता मिश्री मेवा भोग धरे बहु विधि गुणरासी। पावत प्रमुदित प्यारी प्रीतम निरखत सरस माधुरी दासी॥

राग जंगला—जागे जुगल अलिन के प्यारे। श्यामा श्याम सलोने दोऊ अति सुन्दर नैनन के तारे॥ परम प्रसन्न बदन विधु रसनिधि चपल चारु अंसन भुज धारे। हँसि मुसकात मनोहर मूरति भ्राजि रहे सखी कुंज मँझारे॥ तन मन रँगे पगे उज्जल रस रसिक छैल जोवन मतवारे। सरस माधुरी बीरी दीनी लेकर पावत प्राण अधारे॥

उत्थापन आरती राग पीलू बरवा॥

उत्थापन सखि करें आरती। यमुनोदक तुलसीदल मिश्रित युगुल प्रिया पिय अंग वारती॥ युगुलचन्द्रमुख रूपमाधुरी सखी चकोरी दृग निहारती। सरस माधुरी भूषण दंपति हिये हुलासि निजकर सँवारती॥

पीलू—पीवत बार २ अलि पानी। श्यामा श्याम उठे री सजनी छवि निरखत बिन मोल बिकानी॥ नैनन रंग सैन सुख सूचत मंद हँसत बोलत मृदुबानी। ले दरपन दिखरावत सजनी लखि रीझत दंपति रसखानी॥ भूषण बसन सँवारत सहचरि सेवा करत सकल मनमानी। सरस माधुरी साज़बाज ले गावत गुन छवि माहिं छकानी॥

युगुल छवि पद—राजत हैं दोउ रंग रँगीले। नवनिकुंज

सुख पुंज सदन में बिबिकिशोर चितवन चटकीले ॥ अतिसुकुमार डार गलबैंयाँ रूप मनोहर रीझि रिझीले । पान खात मुसकात परस्पर गौर श्याम घन गुन गरबीले ॥ रूपरसामृत नैन पान कर प्रेम महारस छकनि छकीले । सरस माधुरी के मन माहीं बसहु रैन दिन छैल छबीले ॥

दो० बन बिहरन दंपति चले लै सँग सखी समाज ।
छैल छबीले प्रान पति रसिक राय सिरताज ॥

बनविहार पद राग पीलू ॥

बन शोभा निरखन को गवनें सरस युगुल सरकार । संग सहेली निज मन मेली दोउन की रिझवार ॥ हरी भरी अवनी अति सुंदर लता पता मन मोहन हार । जाही जुही चमेली चंपा चटकी कुंद इंदु मंदार ॥ सुभग केवड़ा सरस केतकी राय· बेलि अतिही रुचिकार । फूल गुलाब गेंद दाऊदी सौंन जुही बर हारसिंगार ॥ फूल सेवती सोसन फूली चहुँ दिसि बनी बसंत बहार । गुलतुर्रा गुलबाँस मोगरा फूल मोतिया अरु कचनार ॥ नाना बिधि क्यारी फुलवारी कहों कहाँलग नाम अपार । ललित बेलि बृक्षन लपटाई लहकत पत्र पत्रन लग डार ॥ घूमत फिरत दिये गलबैंयाँ निरखत नई नई फुलवार । सरस माधुरी श्याम राधिका कुंजलतन तर करत बिहार ॥

बन शोभा देखन पद ॥

सघन बनबीथिन करत बिहार । कुंजबिहारि निकुंजबिहारी गौर श्याम सुकुमार ॥ वे उनके वे उनके संगन निज कर करत सिंगार । भूषन सुमन सजे नख सिखलों सखियन के सरदार ॥

हिल मिल हरत परस्पर मन को हँसि हँसि दृगन निहार। आलिंगन चुम्बन परिरंभन लिपट लगत अँकवार॥ गलबैंयाँ दीने रँगभीने दंपति प्राण आधार। रहे मिलाय कपोल प्रेम कर रसिक छैल रिझवार॥ तन मन मिले झिले उज्वल रस छबिको अंत न पार। सरस माधुरी बाँकी झाँकी मन की मोहनहार॥ १॥ बिहरत गहर बन पिय प्यारी। सघन कुंज कमनीय लतन में क्रीड़त बिबिध प्रकारी॥ कियें सुमन शृंगार सलोने नख सिखलों रुचिकारी। संग समूह लियें सहचरि गन ललितादिक अलि सारी॥ फूलन गेंद बनाय चाय सों तक मारत सुकुमारी। धाय धाय ले धरत हरत मन केलिकला विस्तारी॥ पुलकत प्रेम पगे मिल दम्पति रीझ भरत अँकवारी। सरस माधुरी यह रस लीला जीवनमूरि हमारी॥ २॥

राग पीलू बरवा–प्रिया पिय बनछबि नैन निहारें। घूमत झूमत चलत चतुर दोउ गलमें बैंयाँ डारें॥ बिरमि बिरमि कुसुमित तरु डारी निज कर माँहीं धारें। सूंघत सुमन सलोने सुखसों सुख आहा उच्चारें॥ गेंद बनाय गुलाब प्रसूनन सखियन के तक मारें। सरस माधुरी सघन कुंज में भेटत भरि अकवारें॥ १॥ जुगल बर बनछबि देखत डोलें। गहे परस्पर कर सुन्दर बर धरत धरन पग हौलें॥ कुसुमित तरु बहु भाँति सघन अति तिन में द्विजगन बोलें। बानी रससानी सुनि दम्पति हँसि हँसि करत कलोलें॥ मंद मंद गावत हरखावत लेत मोल बिन मोलें। सरस माधुरी पियत अधररस लता कुंज के ओलें॥ २॥ ललन दोउ ललित लतातर ठाढ़े। रस में मगन रसिक सुन्दर बर दे गलबैंयाँ गाढ़े॥ रहे मिलाय कपोल परस्पर अतिही रति रँग बाढ़े। सरस

माधुरी छकन छकी है छिन नाहीं सँग छाड़े ॥ ३ ॥ बन बिहरत पिय लाल लली । जोरी जुगल किशोर किशोरी संग सोहत सुख चरन अली ॥ अंसन भुजा परस्पर दीने गति गयंद शुभ चलनि भली । नौ सत साजि शृँगार सुअंगन करत निकुंजन रंग रली ॥ ललितादिक नव नारि नवेली सुमन डली लियें साथ चली । जै जै जै बलिहारि बोल मुख बरसावत हैं कुसुम कली ॥ बैठे आय ललित बँगले बिच सिंहासन युग छैल छली । सरस माधुरी रस-बस कीनी मनसा बेली सफल फली ॥ ४ ॥

दो० बन फल डाली साजि कर बृन्दाजू महराज ।
भेट धरी सनमुख जुगल आरोगन के काज ॥

वनफलभोग पद ॥

सखियन बन फल सरस मँगाये ॥ मिष्ट आम अमरूद अँगूरी अरु अनार ले भोग धराये । नारंगी केला अरु जामुन सेव फालसा परम सुहाये ॥ सजि डाली आली अति हित सों दम्पति को निज हाथ पवाये । पावत प्रेम मुदित प्यारी पिय सखियन मन आनन्द बढ़ाये ॥ अचवन कर आरोगी बीरी श्रीवन निरख हिये हरखाये । सरस माधुरी फूल हार रचि प्यारी पियगर में पहिराये ॥

श्रीयुगल सरकार के बनसें कुंजभवन में आने के पद राग पूरवी ॥

बनतें बनि आये पिय प्यारी । फूल शृँगार सजे सब अंगन राधा सरस बिहारी ॥ निरख नैन सब सुधि बुधि भूली फूली सखियाँ सारी । सरस माधुरी मूरति दोऊ शोभा लखि बलिहारी ॥ १ ॥ बनतें आवत कुंजभवन में । लटक लटक झुक झूम झमक दोउ

नाहिं समावत फूले मन में ॥ फूल शृँगार किये नख सिखलों मनु फूली फुलवारी तन में। किंकिनि कुनित कटिन पग पायल ज्यों पंछी बोलत बन घन में ॥ मुख अम्बुज मकरंद माधुरी महक रही कुछ मन्द हसन में। अलबेली अनुरागिनि अलिगन मगन फिरत सब संग लगन में ॥ श्याम संग शोभित श्रीश्यामा सन्ध्या फूली मनहु गगन में। सरस माधुरी अतुलित शोभा इक रसना नहिं आत कहन में ॥ २ ॥

दो० सन्ध्या समय सुहावनी नौबत बजत अनूप।
सहनाई में रागनी गौरी स्वर रसरूप ॥
सुन गवने रँगमहल को ले सँग सखी समाज।
पहुँचे मध्य निकुंज के श्रीदम्पति महराज ॥
मणि दीपन दीपावली जगमग जोति अपार।
सिंहासन प्यारी पिया बैठे महल मँझार ॥
जमुना जल झारी सरस लाई सुन्दर बाल।
धोये दम्पति करकमल पुनि पोंछे रूमाल ॥
सन्ध्या भोग सुहावनो सखि लाई भर थाल।
आरोगत आनन्द सों नवल लाड़िली लाल ॥

सन्ध्याभोग पद राग काफी ॥

सन्ध्याभोग थार सखि लाई। बैठे रत्न जटित सिंहासन जीवन जुगल परम सुखदाई ॥ गिरी बदाम चिरोंजी पिस्ता मिश्री तामें मधुर मिलाई। लडुवा मगद बेसनी न्यारे नाना भाँतिन धरी मिठाई ॥ मिल जेंवत दम्पति सुख सम्पति हँसि हँसिके दोउ प्रेम बढ़ाई। ले अचवन आरोगी बीरी सरस निरखि छबि बलि बलि जाई ॥

सन्ध्या आरती पद राग श्याम कल्यान ॥

सन्ध्या आरति सखिन उतारी । कंचन थाल बाल घृत बाती जुगल अंग अंगन पर वारी ॥ रत्न सिंहासन सुखद सुहावन भ्राजि रहे प्रीतम अरु प्यारी । ताल मृदंग झाँझ अरु झालर घंटानाद करें नव नारी ॥ मधुर तान मुख गान उचारें रीझि रहत सुनि सरस बिहारी । चमर मोरछल करत दोउ दिसि निरखत नैनन प्राण अधारी ॥ जै जै बोलि बलैयाँ लै लै दंपति की जावें बलिहारी । सरस माधुरी गौर श्याम की बाँकी झाँकी निज उर धारी ॥

सन्ध्या आरती पीछे गाने का पद ॥

राग ठुमरी ज़िला—महल को आनँद कह्यो न जावे । सन्ध्या समय आरती करके कोइ नाचे कोइ गावे ॥ कोइ ले बीन मृदंग रंगसों नाना गति उपजावे । सारंगीरु सितार तमूरा लै सुरताल मिलावे ॥ कोउ सखि करत प्रशंसा मुख सों सनमुख सीस नवावे । कोउ कर जोर निहोरत दंपति हियको भाव जनावे ॥ कोउ सहचरी परिक्रमा करके फूली अँग न समावे । कोउ पुष्पांजलि लै पुष्पन की जय जय कहि बरषावे ॥ कोउ कर लेत बलैयाँ हितसों निज मस्तक परसावे । कोउ तृण तोरत डीठ डरन डर हेत अधिक प्रगटावे ॥ वार बार पीवत कोउ पानी पुलकत प्रेम बढ़ावे । राई नोंन उतारत कोऊ नेह हृदय न समावे ॥ कोउ लखि लोचन छवि में छकि के देह दसा बिसरावे । गदगद कंठ प्रेम जल पूरित नैन प्रवाह बहावे ॥ यूथाधिप ले संग यूथ निज दरस करन हुलसावे । गह मह भई निकुंज भवन में नाहिं कहन में आवे ॥ कोउ सखि जाय जुगल लालन ढिग चरनन नैन छुवावे । सरस माधुरी रुचि निजकरसों बीरी पान पवावे ॥

श्रीजुगल छवि के पद राग श्याम कल्यान ॥

सखि छबि निरखो श्यामा श्याम। सिंहासन अंसन भुज दीने ब्राजे सुख के धाम ॥ नवलकिशोर किशोरी जोरी अति सुन्दर अभिराम। नख सिख भूखन बसन सलोने लख लाजत रति काम ॥ मृदु मुसकनि चंचल चितवनि कर मोल लेत बिन दाम। सरस माधुरी रीझ बिबस भई सकल महल की बाम ॥ १ ॥ जुगल छवि देखेही बनि आवे। उपमा खोज लगत नहिं पटतर फिर कहु कैसे गावे ॥ दंपति अंग माधुरी अतुलितं समता कुछ नहिं पावे। घन दामिनि लाजत तिन आगे निरखि गगन दुरि जावे ॥ मृदुबोलन सुनि प्रिया लालको कोकिल कंठ लजावे। मुखसोभा लखि सरस माधुरी चंद मंद ह्वै जावे ॥ २ ॥ जुगल छवि निज नैनन में धारों। हिय में ध्यान धरों निसिबासर इकपल छिन न बिसारों ॥ अपनों तन मन अरु सरबस धन मृदुमुसिकन पर वारों। सरस माधुरी मुख मयंक लखि चख चकोर नहिं टारों ॥ ३ ॥

परस्पर जुगल गान पद ठुमरी ॥

रँगीली राधे बीना लेकर गावें। श्याम रूप अभिराम अधर धर बंसी सरस बजावें ॥ ललित मृदंग रंगसों ललिता ठेका संग लगावें। सरस माधुरी निरतत सनमुख भाव बताय रिझावें ॥ १ ॥ लेकर बीन किशोरी गावें। नानागति ले तान मानसों सुनि सुनिके प्रीतम सुख पावें ॥ सप्त सुरनकी अलट पलट कर सरगम गमक सरस उपजावें। मींड मरोर दबाय देत रस प्रीतम रीझ बिबस ह्वै जावें ॥ राग रागनी तीन ग्रामयुत तामाँही मूर्छनाँ जनावें। ग्रीवा लटक मटक भृकुटी की पिय दिसि दोऊ नैन चलावें ॥ उचकनि कुच लचकनि कटि लखिके लालन निज

सुधि बुधि बिसरावें । सरस माधुरी देखि दसा पिय राधे अधर सुधारस प्यावें ॥ २ ॥ प्यारी के गुन गावत प्यारो । बंसी अधरन धार प्यार कर रिझवत राधे प्राण अधारो ॥ ले ले नाम प्रशंसत पुनि पुनि प्रेम बिबस पुलकत मतवारो । सरस माधुरी रीझि लाडिली चूमि चपल मुख निजउर धारो ॥ ३ ॥

दो० चंदन चौकी पर धस्यो भर कंचन को थार।
ब्यारू सामां विविधि विधि आरोगत सरकार ॥

पद ब्यारू ॥

ब्यारू पावत प्रीतम प्यारीं । सामाँ रुचिर चारु चौकी पर भरि धरि राखी कंचन थारी ॥ बरफी सरस जलेबी लडुआ मोहन भोग मलाई न्यारी । खड़ी मठरी मालपुवा सुठि बेढ़ई पूरी सेव सोहारी ॥ सामां सरस विविधि बेलन में पात प्रेमसों प्राण अधारी । बोल बोल दें शीत प्रसादी सखियनको कर कृपा अपारी ॥ साज बाज सुर ताल एक कर गावत गुन सनमुख नव नारी । सरस माधुरी छकी युगल छबि निरखत नैन निमेष बिसारी ॥ १ ॥ ब्यारू करत किशोर किशोरी । एकहि थार माँहि मिल पावत सुन्दर श्याम स्वामिनी गोरी ॥ छप्पन भोग छतीसों व्यञ्जन पृथक पृथक भर धरी कटोरी । पूवा पूरी मगद बेसनी लड्डुवा लघु लघु ललित कचौरी ॥ शाक सलोने रुचिर रायते नुकती किशमिश और पकौरी । पापर तले भुरभुरे न्यारे कचरी टेंटी फूली फुलौरी ॥ विविधि अचार चटपटी चटनी चाखत लालन लेत बहोरी । सरस माधुरी रूप लुभानी निरखि सिरानी अँखियाँ मोरी ॥ २ ॥ ब्यारू आरोगत रस रासी । षट रस व्यञ्जन मिष्ट मनोहर पावत दम्पति प्रेम बिलासी ॥ सेव सलोने और तिकोने खात सराहत सुख के

रासी । पुरस रही सामाँ रुचि लखिके सनमुख सरस माधुरी दासी ॥ ३ ॥ रसिकबिहारी ब्यारू पावें । घृतपक ब्यञ्जन मधुर सलोने रुचि रुचि लालन ले हरषावें ॥ कोर देत अरु लेत परस्पर दम्पति दोऊ नेह जनावें । सरस माधुरी रसकों चसकें हँसि हँसि के हिय में हरषावें ॥ ४ ॥ ब्यारू करत युगुल दयाल । रत्न चौकी जटित जग मग धस्यो कञ्चन थाल ॥ मधुर सामग्री विविधि विधि पाक परम रसाल । अरस परस सुदेत आसन ललित प्यारी लाल ॥ करत मोद विनोद दोऊ प्रेमरस के ज़ाल । फँसी नैनन निरखि सजनी सरस माधुरि बाल ॥ ५ ॥ ब्यारू करत जुगल सुखदाई । कञ्चन थार धस्यो चौकी पर तामाँहीं बहु भाँति मिठाई ॥ पूवा पूरी और कचौरी मिसरी मिश्रित सरस मलाई । दही बरा बासोंधी खुरमाँ सिखरन मोहन भोग सुहाई ॥ शाक अनेकन भाँति रायते मधुर मुरब्बा स्वाद महाई । अदरक चटनी सेंव सलोनी दाल आचार न जात गिनाई ॥ जेंवत पिय प्यारी आनँद सों अरस परस मनुहार जिमाई । पाक प्रशंसा करत कृपानिधि सो सुख सुख बरन्यों नहिं जाई ॥ श्रीजमनोदक लेकर झारी भर गिलास दम्पति को प्याई । पुनि अचवाय दई मुख बीरी सरस माधुरी लई बलाई ॥ ६ ॥

दूध पान करन पद राग खम्माच ॥

दूध आरोगत कुंजबिहारी । कंचनबेला में भर भामिनि लेआई सुखसखि सुखकारी ॥ मिश्रीमिश्रित मधुर मनोहर प्यावत प्रीतम प्रिया मनुहारी । पुनि प्रसाद लेकर पुलकत मन रसिकलाल प्यारो रिझवारी ॥ मोद विनोद बिलास युगुलवर निरखत हरखत हिय

सहचारी । सरस माधुरी हँसि हँसि बतियाँ करत परस्पर प्रीतम प्यारी ॥

रासके पद लिख्यते ॥

दो० सरस बिहारी कहत भये, निज प्यारी सों बैन ।
करिये रास बिलास प्रिय, ममहियकी सुखदेन ॥

राग बिहाग—जैति जैजैति श्रीप्रिया प्राणेश्वरी ॥ कोटि द्युति चंदसी चंद्रिका सीस सजि मंद मुसकात बरषात अमृत भरी । स्वेत जरतार बर वस्त्र अति सोहने मुक्त हीरावली ग्रीव धारन करी ॥ गौर शुभ अंग भूषन बिबिधि भांति के हिये पर हार चंपाकली चौसरी । चरण युग चारु सुखमा सदन कमल वत मधुप मन मोर बिश्राम बिश्वेश्वरी ॥ राधिकानामिनी सखिन की स्वामिनी मत्तगजगामिनी रूपगुण रँगभरी । रास रस दान दे बिनय सुनि कान दे सरस रस माधुरी रसिक रासेश्वरी ॥ १ ॥ पिया की बिनय सुनि राधिका स्वामिनी । मन्द मुसकाय लखि श्यामकी ओर कूं रास आरंभ तब कियो अभिरामिनी ॥ सप्त सुर गाय हुलसाय सांगीत गति बोल मुख ताथेई मत्त गजगामिनी । लेत गति मन मगन बजत नूपुर पगन श्याम सँग बाम अँग चपल मनु दामिनी ॥ जम्यों अतिरंग मिरदंग धुमकिट बजत बीन मुँह चंग स्वर तालमधि जामिनी । जुगल बरचंद चहुँ ओर उडगन यथा सरस रस माधुरी नचत बहु कामिनी ॥ २ ॥ रसिक दोउ करत रास रस रंग । अति अनुरागभरे अलबेले अलिगन लीनें संग ॥ बाजत बीन सरस सारंगी महुवर और मृदंग । सरस माधुरी गान तान की उपजत अमित तरंग ॥ ३ ॥ नचत रास में मोहन गोरी । अरसपरस हिलमिल हँसि हेरत करत चतुर चित-

वन में चोरी ॥ ततताथेई थेई बचन उचारत भाव बतात किशोर किशोरी। हस्तक भेद जनाय जुगल वर लेत चपल गति जोबन जोरी॥ चिबुक परसि चंचल अंचल गहि छतियन छुवत छैल छल-सोंरी। सरस माधुरी रस समुद्र दोउ उपजत तान तरंग हिलोरी॥४॥

राग खम्माच–रास करत प्रिया सरस बिहारी। चहूँ ओर मंडल सखियनको मध्य बिराजत प्रीतम प्यारी॥ गावत राग रंगसों सुर भर बीन मृदंग बजत सुखकारी। छुमछुम चरन धरत धरनीपर हँसि हँसि मुख ताथेइ उचारी॥ डोलत नृत्य करत सखियन में श्री राधे गलबैंयाँ डारी। सरस माधुरी मगन भई है लखि लोचन जोरी सुकुमारी॥

राग केदारा–आज सखि रास में जुगल राजे। नचनि में नवल गति लेत नव भावसों चावसों चौगुने चपल छाजे॥ ठुमक पग धरन गति भरन मनकी हरन मोहनी मन्त्र नूपुर सुबाजे। कोक सांगीत गुननिपुन प्रीतम प्रिया कामरति कोटिशत निरखिलाजे॥ ग्रीव की ढुरनि अरु मुरनि मृदु अंग की हँसनि दुति दसनि भ्रुव बंक भ्राजे। रस सरस माधुरी कहत नाँहिन बने हरखि मुख बोलिये जै सदा जै॥ १ ॥ आज नीके नचत कंत अरु कामिनी। उदित उड़राज निसि सर्द सुखसाज सखि रास-मंडल रमत रसिक पिय स्वामिनी॥ श्याम अभिराम घनश्याम बादर मनों प्रिया संग रंग सों लसत जिमि दामिनी। जुगल मुखचंद की प्रभा पूरित बिपिन सखीगन चकोरी निकट गजगा-मिनी॥ सप्तस्वर साज बाजन बिबिधि भांति सों गात मुसक्यात रस रंग मगी जामिनी। पियत मधु अधर जुग जोर मादक दोउ सरस रस माधुरी राधिका नामिनी॥ २ ॥

दो॰ सिंहासन राजे जुगल कर बहु रास बिलास।
अलियन मिल आरति करी हियभर उमँग हुलास॥

रासआरती पद॥

जय जय युगवर रास रसीले॥ गौर श्यामं अभिराम रसिकबर रँस रासी दोउ रंग रँगीले। कुंजगगन के चंदप्रियापियरूप चाँदनी अँग चमकीले॥ करत पान दृगछटा माधुरी पियत अधर मधु मंद हँसीले। सरसमाधुरी भुज कुस भेटत मेटत ताप अनंग नसीले॥

अलसांनपद राग बिहाग॥

अलसाने दंपति के नैना। सिथिलभये अँग अंग देखियत तुतराते बोलत मुख बैना॥ झुकि झुकि जात परस्पर दोऊ रंग उमंग भरे रसऐना। सरसमाधुरी मतवारे से रति अरु मदर्न मान हरिलैना॥ १॥ जुगल के अँग छाई अलसाँन। अँगरावत रस भरे रसीले सखियनजीवनप्रान॥ कोमल कलित ललित वस्त्रन सों सेज रची सुखदान। पौढ़न तापर चले चतुर दोउ रसिकछैल रसखान॥ संग चली सहचरी सलौनी करत सैनपद गान। सरस माधुरी बसी दृगन में मन्द युगुल मुसकान॥ २॥ श्यामाँ महल श्याम सँग आई। चलत प्रिया पगपायल बाजत पिय कों रति की देत बधाई॥ सेवक सकल सहेली सुंदरि कुंजद्वार बाहर ठहराई। कियो प्रवेश दोउ जब भीतर सुख सखि दिये कपाट लगाई॥ रंध्रनलगि देखत रस लीला सखी सहेली मिल समुदाई। करत निछावर प्राब जुगल पर प्रेममगन मनमोद बढ़ाई॥ दरपन बृहद लगे चहुँदिसि को छबि निज निरखि रहै मुसिकाई। सरस माधुरी चाह बढ़ी रति आनँद सिंधु हृदय न समाई॥ ३॥

दो० सैन कुंज में सुख सखी लाई युगलकिशोर।
सैनभोगे आरोगिये बिनय करी कर जोर॥
गादीपर राजे जुगल ललित लड़ैती लाल।
श्यामचरण दासी धस्यो भरि भोजन को थाल॥

सैनभोगपद राग बिहाग॥

सैनभोग भरि लाई थारी। जेंवत जुगल सखिन की जीवनि श्रीराधाबर सरस बिहारी॥ खाजा सरस जलेबी खुरमा गूँजा मठरी मधुर सँवारी। लुचई लडुआ मगद बेसनी मोहनभोग महारुचिकारी॥ पेरा मोतीपाक पकौरी कछु कोरी दधिबोरी न्यारी। बरफी फैनी अति रस देनी मोहनथाल अमित तरकारी॥ पूरी पापर सेव कचौरी नींबू आम अनेक अचारी। अरसपरस पावत मिल दंपति अति अनुरागभरे पिय प्यारी॥ जमुनाजल सीतल अचवावत श्याम चरण दासी लिये भारी। सरस माधुरी बीरी दीनी जुगलचंद मुखछबि उर धारी॥

दो० पुनि सय्या स्वाये जुगल श्रीसुखसखि हुलसाय।
श्याम चरणदासी सखी लगी पलोटन पाय॥

सखीवचन पद पौढ़ावनी॥

रंगीले रंग बिलसो रंग भरी रैन। कुंजबिहारि निकुंजबिहारी नींद घुरानी नैन॥ कुसमन सेज रची अति सुंदर निरखत उमगत मैन। सरस माधुरी पियप्यारीजू करो सैन सुख चैन॥

सैनपद बिहाग—पौढ़े मिल रसिकरमण पिय प्यारी। अरस परस दीन्हे गलबैंया राधा सरस बिहारी॥ हँस मुसकात परस्पर दोऊ अंग उमंग अपारी। हिलत मिलत पुलकत तन दंपति नैनन नींद खुमारी॥ अतर सुगंध माल फूलनकी अरु जमनोदकभारी।

पान दाँन मिष्टान्न थाल ढिंग धरे सेज सहचारी ॥ अलबेले अनुरागी लंपट लिपटरहे अँकवारी । सरस माधुरी केलि कुंजकी सखियन नैन निहारी ॥ १ ॥ सुमनसेज पौढ़े मिल दंपति । श्रीसुखसखी उढ़ाय पीत पट श्यामचरणदासी पद चंपति ॥ लपटि रहे अनुराग रंग में आलस बस दृग दोऊ झंपति । सरस माधुरी रस में भीनें रसिक सुजान सखिन की संपति ॥ २ ॥

पुनि सैनपद—पौढ़े रंगमहल पिय गोरी । श्याम चरणदासी पद चाँपत नींद नैन छइ थोरी थोरी ॥ दंपति पद हिय पर पधराये प्रेमबिबश पुलकत तनसोंरीं । सरसमाधुरीं छकी जुगल छबि नख सिख नवल नेहरँग बोरी ॥

पद आशीर्वाद राग बिहाग ॥

चिरजीवो श्रीयुगुल बिहारी । नित नव केलि करो कुंजन में रसिकशिरोमणि प्रीतम प्यारी ॥ रँगमहल निस दिन रंग बरसो सुख सरसो अनुदिन अधिकारी । उमग अंग आनँद रस लूटो हिलमिल पीवो अधरसुधारी ॥ युगुल बिलास हमारी जीवन नैनन निरखि रहें मतवारी । सरस माधुरी सेवा तत्सुख देहु दयानिधि तुमपर वारी ॥ १ ॥ नित्य नव कुंज में मोद मंगल करो । नित्य नव रास परिहास रसरँग मँगे युगुल कल केलि रस झेलि आनँद भरो ॥ नित्य नव सेजपर सुरतिसुख बिलसि बिबि हुलसि हियहेत सों नेक नाहीं टरो । नित्य नव महल में मौज दंपति लखों सरस रस माधुरी टहल दे दुख हरो ॥ २ ॥

पद विनय राग केदारा व बिहाग ॥

जुगल जीवन बिनय प्रान मो लीजिये । दोउ कर जोर जाचों टहल महल की चरण युँग सेव कर कृपा मोहि दीजिये ॥ १ ॥ रहों

नित संग रस रंग निरखों सदा यही मोहे दान दम्पति कृपा कीजिये। भक्ति अरु मुक्ति की नाहिं मन कामना रूप रस छबिछटा पान कर जीजिये ॥ २ ॥ अधम अति दीन मन मलीन मूरख महा मोर अपराध लखि नाँहि मन खीजिये। सरस रस माधुरी शरण युगचरण की यही मन चाह रस प्रेम नित पीजिये ॥ ३ ॥

भरोसे व आश्रय के पद राग बिहाग ॥

भरोसो श्रीशुक मुनि को भारी। जिनको नाम सकलसुख की निधि सब बिधि मंगलकारी ॥ चरण चारु नखचंद चंद्रिका भावक हियतम हारी। दरसें सहज सलोने दम्पति राधा सरस बिहारी ॥ अतुलित दया करत निज जनपर भाव भक्ति दातारी। सरस माधुरी केलि कुंज की कृपा करो बलिहारी ॥ १ ॥ आसरो श्याम चरन-दास चेरननको। और उपाय नहीं कोउ दीखत या भवसिंधु तरन को ॥ दृढ़ विश्वास आस इनहीं की याचक नाहिं नरन को। टारी टेक टरे नहिं कबही भय नहिं जन्म मरनको ॥ जगमें दासन दास कहाये नहिं अभिमान बरनको। सरस माधुरी संशय नाहीं है बल मोहि शरनको ॥ २ ॥

इति अष्टयाम ॥

विज्ञापन।

समस्त वैष्णव हरिभक्त प्रेमानुरागियों को विदित हो कि इस दोहावली व पदावली अष्टयाम जिसमें श्रीमद्वृन्दावन युगुलविहारी भक्तजनहितकारी महाराज की अष्टप्रहर की सेवा उपयोगी दोहे व ललित राग रागिनियों में परममनोहर उज्ज्वल रस भावभूषित परमानन्दसूचित श्रीयुत शुकाचार्य्य श्यामचरणदासीय सम्प्रदाय मुकुटमणि श्रीमत् स्वामी बलदेवदासजी महाराज के परमकृपापात्र प्रेममूर्ति श्रीमान् पंडित शिवदयाल हरिसम्बन्धी नाम सरसमाधुरीशरण गौड़ द्विज जयपुरनिवासी शिष्य ने युग्म श्रीमद्वृन्दावनचन्द की प्रेरणासे रचनाकर भगवत् सेवापरायण उपासकों के प्रेमवर्द्धन निमित्त छपाकर प्रसिद्ध किया है आशा है कि समस्त सज्जन भक्तवृंद परमप्रिय इष्टमिष्टकी सेवा के समय प्रेमपूर्वक दोहा व पदों को वादित्र सहित सुंदर गांन व श्रीयुग्म छबि माधुरी का अनुसन्धान करते हुए प्रेमामृत का पानकर अष्टयामरचयिता के श्रम को सफल करें और इनही अष्टयाम रचयिताकी रचित रासपंचाध्यायी, मुदरियालीला, नवयोगिनिलीला, झूलनलीला, फागलीला, ब्रह्मचारीलीला, योगनाटक, वैष्णवनाटक, आदि परममाधुर्यरसात्मक मौजूद हैं भगवतइच्छानुकूल यथावकाश वेभी छपकर प्रेमानुरागियों के करकमलों में समर्पण की जावेंगी नित्य पाठ संग्रह भाषा व संस्कृत दो भागों में जयपुर जेल प्रेस में छपरहा है वह भी शीघ्रही भक्तजनों के दृष्टिगोचर होगा। इति

आपका कृपाभिलाषी–
बाबू कन्हैयालाल भार्गव,
नरही–लखनऊ.